अच्छा सुखी जीवन क मंत्र।

1) सीखब, पईसा कमाऊब अऊर काम करय के ईसब एकसाथ करयं के चाही। विद्या अऊर धन कमावत दईयॉ अपने सक्के बुढापा या मौत नाय आय सक्तं। अईसन सोच के रख्यके ही काम करयं के चाहीं। काहीके की अपने सक्के कभव भी मृत्यु आय सकथं।

2) जानकारी, ज्ञान अपने सब क जबाब बां। जवने आदमीके विद्या तथा शास्त्र ज्ञान न होई ओके अंधा समझा जाथं। अईसने आदमीके अधेरें में जन्म लिहीनं अऊर अंधेरा में मरगऐन अईसन समझय के चाही।

3) अमिरी, जवानी, सत्ता अऊर अविचार (खराब सोच) ई चारव में से कवन भी लगे रहयं त अनर्थ होथं।

4) पूनम क अकेला चॉद उजाला देथं, लेकीन अमावस के राती में अनगीनत तारा भी उजाला नाय देई सकतं। ऐहिबीना सौठे लडिक्यन के अपेक्षा एक खे गुनवान लडिक्यॉ काफी बा।

5) शेर के मुहेंमें हिरन कभव अपने आप नाय जातं। उहू के भी पेट भरयं बीना मेहनत करयं पडथं।

6) बुद्धिमान आपन समय काव्य शास्त्र में बितावथेनं। परंतु मूर्ख आपन समय नींद, बुरी आदत या झगडा लडाई कईके बीतावथ।

7) पराया धन अऊर पराई औरत के तरफ जे बूरी नजर से नाय देखथं अऊर प्राणी (जनावर) से प्रेम करयं उहय सच्चा ज्ञानी बां।

8) बुढ़ापन क सलाह मान्य के चाही, लेकीन सिर्फ संकट के वक्त। हमेशा मनब त खाना भी न मिलीं।

9) अच्छा भला आदमी भी संकट के वक्त लालच में

पड़ जाथं। ऐहिबीना श्रीराम भी स्वर्ण-मृग के मोह से नाहीं।

10) समूह के सफलता पे विश्श्वास होई तभव ओकर नेतृत्व करयं के चाहीं। या संकट क सामना करयं के चाहीं।

11) आपन या पुरी दुनियॉ क कल्याण करयं के बात नींद, आलस, डर, कामचोरी आदि से दूर रहयं के चाहीं।

12) आदमी के आपन धन अऊर जीवन अच्छे काम में लगाव्य के चाही। काही के की ई शरीर साथ नाय रहयंवाला बां।

13) आव्यवाले संकट से डर लग सकथं लेकीन संकट आव्यपे उचित रास्ता ठुंढय के चाहीं।

14) अतिथी भगवान क दुसर रूप बां, ओन्हयं नाराज न करयं। नाहीत आपके माथा पे पाप चढ़ी अऊर आपक कमावल पुन्य ऊ लेयं जाई।

15) कठिन वक्त पे विद्वान क काम साधारन बुद्धीमान भी कई सकथं। ऐहिबीना रेगिस्तान में एटडं के भी वृक्ष कहथेनं।

16) आपन घराया ई सोच छोडके वसुधैव परिवार क मंत्र अपनाव्यं।

17) जेम्मा केहूक, लाभ होथ उहीं से दोस्त अऊर दुश्मन पैदा होथेनं।

18) दोस्तेके असली पहचान मुसीबत तकलीफ के वक्त ,ईमानदार ईन्सान क पहचान कर्जा में डुबय पे, पत्नी क पहचान आर्थिक तंगी में, अऊर रिश्तेदारन क पहचान संकट के वक्त होथं।

19) खुशी तथा संकट दुनव भी वक्त के आखिर तक साथ देथं उहय सच्चा मित्र या रिश्तेदार बां।

20) कोयला अऊर दुष्ट (खराब ईन्सांन) ऐम्मा कवनव फरक नाय बां। जलत दईयॉ कोयला दुसरे के जलावथं अऊर ठंडा होव्यपे हाथ काला करथं।

21) गलत आदमी के बातपे विश्श्वास न रखयं के चाहीं। ओकर जुबान मीठ होथ, लेकीन दिल में जहर रहथं।

22) खराब आदमी के

संगत करयं से (दोस्ती) ऊ बिल्ली, बकरा तथा कौवा के तरह भारी पडथं।

23) जवने तरह एक्खे जलत लक्ड़ीसे समुद्र क पानी गरम नाय होत, उही तरह अच्छा आदमी के मन चिढाव्यसे नाय बदलतं।

24) बईल वाला गाडी पानीपे नाय चल सकत काहीकेकी नामुकीन बात मुमकीन नाय होत।

25) सच्चा दोस्त बहरे से नारियल के तरह खुरदरा अऊर सक्त अऊर अंदर से नम्र अऊर अच्छा होथं। लेकीन बहरे से गोल-गोल बात करयं वाले आदमी या दोस्त स्वार्थी होथेनं।

26) शुद्ध मन, त्याग क सोच, बहादुरी, सुख-दुख समय एक जईसन आचरण अऊर नम्रता, प्रेम, सच्चाई ई सच्चा दोस्त क गुण बां।

27) चंचल, चुगलखोर, गुसईल, निर्दयी हमेशा खेलय वाले अऊर झूठ बोलवाले दोस्तनसे दूर रहयं के चाहीं।

28) दिल मे कुछ, कहनी अऊर करनी अवरव कुछ ई खराब इन्सान क निशानी बां। ऐन्हनसे दूर रहयं।

29) अगला कदम सोच-समझके रखयवाले क होशियार कहथेनं।

30) सलाह देन्यवाले बहुत मिलथेन, लेकीन कर्तव्य पूरा करयं वाला एक्कखे महात्मा होथं।

31) जहॉ मान-सम्मान नाय मिलत ऊहा पेट नाय भरत, पढाई क व्यवस्था नाय, संगा संबंधी नाही अईसने प्रदेश क त्याग करब उचीत बां।

32) जवने जगह पे पेट भरयं क साधन राज्य कारक क दबाव, बुराई बीना गुस्सा नम्रता अऊर त्यागी वृत्ती बचल होई, ऊही जगह पे बसब,रहब अच्छा बां।

33) जवने जगह पे संकट के वक्त मदत करयं वाला, वैद्य,वेद क निपूण विद्वान न होय ऊहॉ वास्तव न करयं के चाहीं।

34) जायदाद के वजह से आदमी के दोस्त, रिश्तेदार मिलथेनं अऊर ऊहय जग में

विद्वान अऊर सर्वश्रेष्ठ माना जायं।

35) अपने धन क नुकसान, मनक गुस्सा, घरे क गलत बात, खूद के साथ धोख्खा आपन अपमान केहूसे न कहयं के चाही।

36) स्वाभिमान आदमी आग के समान होथं। ऊ बुझथं लेकीन लाचार नाय होतं।

37) लालच बुद्धीके विचलीत करथं, आदमी के तकलिफ देथं।

38) जहॉ लडिक्यॉ नाय बाऐन ऊहॉ सुख नायबा सच्चा दोस्त जरूरी बां।

39) असंतुष्ट आदमी में पागलपन रहथं संतुष्ट आदमी समाधानी होथं।

40) जानवर, दोस्तन पे दया करयं के चाही। ईहय सच्चा धर्म बां। सच्चे भावना से प्रेम अऊर सही वक्त पे निर्णय लेब ईहिके होशियारी कहथेनं।

41)जग में दुई बात जरूरी बां। कविता क आस्वाद अऊर सज्जन क सहवास् ।

42) खूद बीना या दान धर्म बीना कामेमें आव्यवाली संम्पत्ती (धन) असली बां। बाकी कुल न के बराबर बां।

43) बुद्धिमान आदमी संकट के वक्त डरत नाथ। नष्ट भयलं चीजी बीना दुख नाय करतं।

44) ज्ञान क ईस्तमाल आचरण में करयं वाला विद्वान कहलावथं।

45) काम में नियमित्ता, उत्साह,)ज्ञान क हरपल उपयोग, निर्व्यसनी, बहादुर, कृतज्ञ, तथा मित्रता बनाय रखयं वाला के पास हमेशा लक्ष्मी रहथीनं।

46)) सुख-दुख ई जीवन चक्र बा। सफलता पूर्वक ओकर सम्मान करयं के चाहीं।

47) छोट मनई छाोट आदमी के संकट से मुक्त कई सकथं।

49) चरित्रवान, बहादूर, धार्मिर्क तथा राजनिती में डुबल ईन्सान ही पृथ्वी पे राज कई सकथं।

50) सरकार बा त प्रशासन बां। प्रशासन बा त पत्नी अऊर पईसा बां।

51) समझदार राजा

के वजह से प्रजा कर्तव्य क पालन करथेनं। कानुन भी डरसेही कुलवान औरत भी अपने विकलांग पति के साथ रहथं।

52) सज्जन के सहवास में प्रगती होथ, अऊर दुर्जन के सहवास में अधोगतिं।

53) आदमी शरीर अऊर संम्पती ई संकट क घर बां। कुछ सुख से दूर रहं।

54) दुई नाव पे सवार होईके नदी पार नाय कई सकथेनं। उही तरिकासे दुई बात के पिछे भाग्य वाले के आखिर में कुछ नाय लिलतं।

55) आलसी मनईसे औरत अऊर पईसा दुनव दुर रहथेनं।

56) आलसपन, पत्नी क गुलामी, रोग से भरा, जन्म भूमी क ज्यादा व्याकुलता, असतुंष्टता अऊर डरपोकपना ई प्रगतिक मुख्य बाधा बां।

57) धन क उपयोग, उपभोग अऊर दान बीना करयं के चाही।

58) बलवान बीना कवनव चीज भारी नाय रहतं, व्यापारी बीना कवनव जगह दूर नाय बां। उहीतरीका से विद्या ग्रहण करयं वालन के मिठा बोल्य वालन के कवनव भी चीज पराया नाय बां।

59) जब तक काल नाय आवत तबतक सैकड़ो गोली लगय पें भी आदमी नाय मरत, लेकीन काल के आव्यपे एक गोली भी मृत्यु क कारण बन कसथ।

60) पराक्रम के बल पे शेर राजा बनथं। पराक्रमी बनं।

61) सेवा धर्म ई बहूत कठीन धर्म बां। ओके सम्भालके करयं के चाही।

62) अपने घरे क सग्गा सम्बधी से रक्षा तथा दुश्मन से रक्षा बीना आदमी राजा के ईहॉ नौकरी करथं।

63) कौवॉ के माफीक पेट मत भर, खुद के मेहनत से पेट भरं।

64) अपने लडिक्यॉ पे, गुरू पे, सेवक पे गरीब पे संम्बधी पे, प्रेम करयं के चाहीं।

65) संसार में अच्छा या बुरा कुछ नाय होत, ओकर काम से ओके अच्छा या बुरा बनथं।

66) कमजोर होव्यके डर से आपन सभे खाना नाय छोडीत। उही तरिकासे काम में दोष के डर से काम करब बंद न करयं के चाही।

67) सृष्टी में सुंदरता या कुरूपता अईसन कुछ भी नाय होत। जेके जवन पंसद बा ओके उहय सुंदर लगथं।

68) अपने सक्के करिब लोगन क सहारा होथं, चाहे ऊ अशिक्षित या कवनव भी खानदान क होई।

69) छोटकन क दिहलं गयलं सलाह व्यर्थ नाय होत, काहिके की सूरज के अभाव में छोटे से दियाक प्रकाश भी जरूरी बां।

70) फिजूलखर्ची से कुबेर भी दरिद्र बना रहां।

71) नियम सबके बीना एक जईसन होव्यके चाही। गलती होव्यपे राजा के भी सजा मिलय के चाहीं।

72) चोर न से, दुश्मन से, जवन राजा प्रजा क रक्षा करथं उहय न्यायी बां।

73) चित्रकार एक्य कगजे पे उचांई अऊर ढलान दिखाय सक्थं। उही तरिकासे चालाक आदमी सूठ के सच बनाई सकथं।

74) खराब पत्नी, धुर्त दोस्त, पलट के जवाब देव्यवाला नौकर हमेशा खतरनाक रहथेनं।

75) आदमी बुद्धी से हि बसवान बनथं।

76) मुश्लील वक्त पे दोस्त क सही सलाह देव ब आपन कर्तव्य बां।

77) जहर मिलल खाना, ढिल दांत, अऊर खराब मंत्री ऐकर जड से नाश करय पे ही सुख प्राप्त होई।

78) सुनय में कटू (खराब) लेकीन हितकारक अऊर सुखकारक बोल जहॉ बोला जाथ अऊर सुना जाथ ऊहॉ वैभव अऊर आनंद (सूख) क वास रहथं।

79) जवने तरीका से कुत्ता क पुछ टेढ रहथं उहय तरिकासे खराब मनई क स्वभाव नाय बदलतं।

80) सामने वालेक हार कवने चीज में बा ई जेके समजझ में

आयलं ऊ संकट के व्यक्त सफलता क रास्ता ढूंढ लेथं।

81) अपराधी चाहे दुश्मन होई या दोस्त ओके समान सजा देब राजा क सरकार कर्तव्य बां।

82) गलत जगह पे दया दिखाव्य वाला आदमी, गलत चीज खाऐ वाला ब्राह्मण, अपने अधीन न रहयं वाली पत्नी, बूरा ख्याल रखयं वाला दोस्त, सेवक अऊर अधिकारी ऐनकर सक्कर त्याग करयं के चाही।

83) जवने तरह से नाव के केवट क जरूरत होथं उही तरह से प्रजा के योग्य राजा, शासक क जरूरत होथं।

84)प्रजा क रक्षा ई शासन क कर्तव्य बां।

85) सॉप हाथी के मार सकथं। राजा हसंत-हसंत दडं देय सकथं। अऊर दूर्जन मानसम्मान देईके भी घात कई सकथं।

86) सॉप दूध पियाऊब मतलब घातक बां, वईसेही मूर्ख के सलाह देऊब घातक बां।

87) नीच लोगोन क सेवा न करके, गुणी लोगन क सेवा करबं।
काहिकेकी दारू बेचय वालन के हाथे से पानी पीयायपें भी दारू पियता अईसन समझथेनं।

88) रावण, सीता क उपहरण करय पे जवने तरिका से समूद्र सेतु के बंधन में फसंगयलं रहा वईसेही दुष्ट पाप करथं अऊर सज्जन के ओकर फल भुगतय पडथं।

89) जाजूस कवनव भी राज्य क तीसरी ऑख बां। राज्य पे आवय वाली संकट के उहय भगाय सकथं।

90) कुत्ता के राजा बनाईदं तभव ऊ चप्पल सुघंय बीना नाय रही सकतं। वईसेही खराब आदमी क स्वभाव नाय बदलत।

91) अनुभवी बुजूर्ग के बीना सब काम नाय होय सक्तं। जहॉ धर्म बा उहॉ सत्य बां। जहॉ धोखाधाड़ी बा उहॉ असत्य वास करथं।

92) असंतुष्ट रहय पे ब्राह्मण क नाश होथं अऊर संतुष्ट रहय पे राजा का नाश होथं। लाज अपनाव्य

पे वैश्या नष्ट होथ अऊर लाज छोडयपें साधारण औरत बर्बाद होथं।

93) भला करयं वाला आपन अऊर बुरा करयं वाला पराया होथं। काहिकेकी शरीर में भयलं जख्म बीना जंगल क दवाई जरूरी बा।

94) मीठा बोल्यवाला वैद्य, आपन गुरू,मंत्री अऊर राजा क नाष करथेनं।

95) इंनसान के दुसरे बीना धन क नाही, प्राण क भी त्याग करय से कभव न कतराऐ के चाही। काहीकेकी देह (शरीर) बीना काम क बां।

96) निर्बुद्धि के शास्त्र क जरूरत नाही वईसे हि अंधे के आईना क जरूरत नाही।

97) देवता, गुरू, गाय, राजा, ब्राह्मण, लडिक्यॉ बुढ़ापा अऊर बीमार पे गुस्सा न करयं के चाही।

98) अच्छा मत क आदमी अऊर गंभीर मन के आदमी में बहुत फरक बां। अच्छा आदमी छोट काम करय पेभी गडबडावथं। लेकीन गंभीर मनक आदमी बड़ा काम अचल मन से करथेनं।

99) राजा, यज्ञ, शादी, संकट, दुश्मन क नाश, यश प्राप्ती देव्य वाला काम, दोस्ती प्रिय औरत, गरीब सगा- संब्नंधी ई आठ चीजेपे किहल खर्च व्यर्थ नाय जातं। ई योग्य बां।

100) आदमी अज्ञानी होव्यके वजह से बुरे वक्त में भगवान के दोष देयं,लेकीन अपन गलती नाय मानंत।

101) अच्छा काम करवायवाला नौकर के तरफ ध्यान देईके काम करयं वालन के ईनाम देईके ओकर तारिफ करयं के चाहीं।

102) अपकार करयवाले मित्र के साथ मेलजोल न रखके उपकार करयं वाले शत्रु के साथ रहयं के चाहीं।

103) भयकारक (डर) वक्त आव्यतक डरंय, मगर आव्यपे ओकर मुकाबला करयं।

104) कर्तव्य हमेशा आपन समझ के पूरा करं। काहीकेक कर्तव्य-परायण आदमी के रूकावट क

मुकबला कई सकथं।

105) सत्यवादी आदमी सत्य क साथ कभव नाय छोड़तं।

106) जेकर धन समाज में समान (एक जईसन) रूप में बटॉ जाथं। जेकर जासूस गुपीतरहथेनं, जेकर सलाह-मशवरा गुप्त रहथं अऊर जे लोगंन बीना गलत शब्द क प्रयोग नाय करतं उहय पृथ्वी पे राज करयं वाला योग्य राजा बां।

107) जे भुखसे व्याकूल होथेनं ऊ कईसव भी पाप करय बीना तईयार होथेनं। काहिकेही ओन क्षणिक (कुछपल) निर्दयी बनथेनं।

108) जमीन दान, स्वर्णदान, गऊदान, अन्नाजदान ई सबसे अभयदान (कभवन डर सकयवाला) सर्वश्रेष्ठ दान बां।

109) जवानी, सुंदरता, धनसंचय आयुष्य अऊर प्रियजन क सहवास ई सब नश्वर बां। ज्ञानी आदमी के ऐम्मा फसयं के न चाही।

110) महासागर में तैरत दुई लकड़ी के तरह जग में आदमी क मिलन बां। लकड़ी सामान्य लहर से भी दूर होय सकथं।

111) जानवर मात्र क सहवास अनगिनत के समान होथ।

112) जीन्दंगी नदी के बहाव जईसन होथं। बहाव आगे जायके वापस नाय आवतं।

113) बारीश के मेघा की तरह आदमी के गर्जना न करयं के चाहीं। समाज के अच्छा बुरा क पहिचान होथं।

114) समय पे काम न करयं से ओकर मुल्य कम होई जाथ।

115) काम,क्रोध, मोह, लोभ, मन क इच्छा अऊर मदत ऐसे सावधान रहवंवाला आदमी जीवन में सफल होथ।

116) ज्ञानी या अज्ञानी के आपन सभे समझ सकिथं लेकीन अल्पज्ञान से जेके गर्व भयलं बा ओके समाधान ब्रह्मदेव भी नाय समझाय सकतेनं।

117) जलदबाजी में कवनव काम

मत करं। गलत विचार आपत्ती क मुल कारन बां। समझदार आदमी के लक्ष्मी हार पहनावथीनं।

118) अनुभवसे आदमी छाच भी फूकके पियथं।

119) लालची के धन से जीत, नीच के हाथ जोडके, मुर्ख के ओकरे तरह आचरण से अऊर ज्ञानी के सत्यवचन से जीतयं के चाहीं।

120) दोस्त के सद्भावना से, सगा सम्बधी के स्वागत से, पत्नी-नौकरन के भेटवस्तू अऊर मान-समामन से अऊर अन्य लोगन के विनम्र आचरण से जीतय के चाही।

121) आपन पराया अईसन भेद न करयं के चाही। पूरी पृथ्वी के आपन परिवार समझय के चाही।

पंचतंत्र

1) पैदा होत्य लडिक्यॉ अगर बुद्धिहीन बा त ओकर पैदा होत्य मर जाऊब अच्छा बां।

2) गाय जवन बछीयॉ के जन्म नाय देत अऊर दूध भी नाय देत ओकर कवनव मतलब नाय होतं। उही तरीका से जवन लडिक्यॉ विद्वान अऊर शक्तिमान नाय बां ओकर पैदा होऊब व्यर्थ बां।

3) जीवन में पढाई क कवनव अन्त नाय बां। संकट कई ठे आवथेनं, ओकर सामना करं। अच्छाक साथ द अऊर बुराई क त्याग करं।

4) पईसा से साहस नाय होत अईसन कुछ भी नाय होतं। ऐहिबीना होशियार आदमी के पईसा कमाव्य के चाहीं।

5) पईसा के पिच्छे सब भागथं। संम्बधी भी दोस्तभी पईसा के पिच्छे भागथेनं। पईसा वालन के ही दुनियॉ में विद्वान अऊर सर्वश्रेष्ठ मानथेनं।

6) दुनियॉ में अमीरत के आपन अऊर गरिबन के पराया मानथेनं। अगर ऊ संगासम्बंधी होई फिर भी।

7) जेकरे पास धन बा ऊ जवान रहथं। जेकरे पास धन

नायब ऊ जवान भी बुढापा लगथं।

8) भगवान जेकर रक्षा करथेन ओके केवभी नाय मार सकथं।

9) अपने जीवन से दुनिया के जीवन देथं उहय सच्चा ज्ञानी बां।

10) जवन आदमी विद्याहीन, अकुलीन अऊर असंस्कृत होईके भी सबसे नजदीक बा, राजा, औरत अऊर बेला ओनकर सहारा लेथं।

11) वक्त कईसन भी होय, जवन आदमी सोचके निर्णय लेथं ओके कभव पछताव्य नाय पड़तं।

12) सच्चा सेवक अपने मालिक के अधिन रहय के चाहीं। वक्त आव्यपे मालीक के रक्षा बीना न कतराऐ के चाही।

13) कुछ चीजं बुद्धी अऊर सामर्थ से हि प्राप्त होथं। हाथी, घोडा या शस्त्र क इस्तेमाल करके नाही।

14) केहूपेभी जरूरत से ज्यादा भरोसा न करयं के चाहीं। वक्त आव्यपे छोट आदमी से भी धोका मिल सकथं।

15) संकट के वक्त अपने बुद्धिक जान लेवा बीमारी के वक्त डॉक्टर के बुद्धिक परिक्षा होथं। संकट वक्त पे सच्चा बुद्धिमान काम आवथ।

16) पंक्षी बीना फल के झाड के त्याग देथेनं अऊर सेवक मंजदूरी न देव्य वालनकें।
(ऐहिबीना काम क पईसा तुरंतय देव्यके चाही।)

17) जवन नेता अपने कर्मचारीन के वेतन (सेलेरी) देथेनं, ऊ कर्मचारी ओनकर सक्कर हमेशा सम्मान करथेनं।

18) दुनियॉ मे दुष्टन क नाय चलतं ऐहिबीना ई सुरक्षित बां।

19) लड़कीन क जन्म लेब चिन्तां बां। बड़ी होव्यपे ओकर विवाह करबं, अऊर ओकरे बाद ओकरे सुख-शांती क चिन्तां करब ऐहिमें पिता क जीवन समाप्त होथं।

20) जेकरे पत्नी के मने में दुसरे क विचार आवथं। जेकरे घरमें सॉप क बसेरा बां, अऊर जे नदी के किनारा पे

रहथं, ओकरे जीवन क कवनव ठीकाणा नाय बां।

21) युक्ती के शत्रू पे विजय प्राप्त कई सकीथं। कभी-कभी जवन काम शस्त्र नाय कर सकथ बऊ युक्ती करथं।

22) जग में बुद्धिमान क मान-सम्मान होथं, बुद्धिहीन के कवभी नाय पुच्छतं।

23) प्रजा अगर गाय समान होईत राजा गवाल समान होव्यके चाहीं। तभयं ऊ पालन-पोषण में न्याय कर सकथं।

24) स्वार्थ से केहूकभी समाधान नाय होय सकथं।

25) राजा अपने प्रजाक पौधा समान जतन करीत प्रजा ओके बडा फल देई।

26) जवन काम लाखों घोडा-हाथी नाय होईसकथ ऊ काम एक्खे किल्ला कई सकथं।

27) दुश्मन अऊर आग से सावधान रहयं के चाही। निर्माण होत्य ओकर नाश करयं के चाहीं नाहीत तकलीफ होय सकथं।

28) आपन अऊर दुश्मन के ताकद क अंन्दाजा लिहेबीना जे दुश्मन पे वार करथं ऊ आग में पतंगाके माफीक खाक होई जाथं।

29) प्रिय व्यक्ती अऊर अपने शरीर से आदमी हमेशा प्रेम करथं। शरीर बेकार होव्य पे भी ऊ ओकर त्याग नाय करतं।

30) उपकार करयं वालन के साथ सभय अच्छा बर्ताव करथेनं। लेकीन अपाय करयं वालन के सघें जे अच्छा बर्ताव करथं ऊहयं सच्चा आदमी बां।

31) राजा या प्रजा, सभय के केहून केहूक आशा रहथ। ऐहिबीना ई दुनियॉ चलथं।

32) पानी गरम करयं पे देर से ठंडा होथं। उही प्रकार उपदेश पे अपदेश देव्यसे अज्ञानी में बदलाव नाही होई।

33) जग में अगर सुरक्षित रहय के बा त दुसरन पे भरोसा करय के चाही।.

34) अगर तोहार दोस्त मदत मांगय बीना तोहरे घर ेआवथेनं ऐकर मतलब तु बडा हय।.

35) सेवा करबं अऊर सुघयं में फरक बां। कुत्ता अपने इच्छासे भटकत रहथं। लेकीन सेवक के दूसरे क सुनय पडथ।

36) दरिद्रता, रोगी, पागल, अऊर हमेशा सेवा में मग्न ई सब जिंदा रहिकेभी मरतं बाऐनं।

37) जेकर रोज क जीदंगी अऊर घर समान होथ ओन्हनसे दोस्ती अऊर शादी होथं।

38) अपने राजा क गुप्त विषय में जे बखान करथं ऊ खूद के तरफ क अरूर राजा के नाश क कारणं बनथं।

39) कवनव कारण वष से गुस्सा करंयवाले के शांत कई सक्थं, लेकिन बीना वजह क्रोधी कं समाधान भग्वान भी नाय कर संक्तेनं।

40) जवन सेवक भक्तिसे पूरा अपने स्वामी के बीना जान देथं ऊ अगर होई जाथं।

41) तिरछी आँखवाले क आँख कतव अऊर नजर कत्व अऊर होथं, उही तरिकासे खराब लोगन क काम कुछ अऊर ध्यान कत्व अऊर रहथं।

42) काम करयं वाले खराब होईही तं अच्छे कंम्पनी में भी काम न करयं के चाहीं। अच्छे लोगन के साथ कंम्पनी छोट होव्यपेभी काम कई सकीथं।

43) जे बडकन क अपमान करथेनं ऊ कभव सुखी नाय रही स्कथेनं।

44) दुश्मन अगर ताकतवर होईत दुर्बल के भागजाऐके चाही।

45) कवनव लगाव के वजह से रहयवाला कभव सफल नाय होतं.। काम के बारेमें बहरे जाऐवाला ही सफल होथं।

46) जेक्के पास बुद्धि बां उहय सच्चा बलवान बां। कहिकेकी हाथी भी चिंटी से डरथ।

47) एक्ता में ताकत बां। काहिकेकी घाससे बनलं रस्सी हाथी के भी बांधके रख सकथं।

48) बुदि्धान अऊर पागल में फर्क रहथं।। खत्म भयंल चीजी बीना रोवथेनं।

49) संकट काल में मदत

करयं वाला दोस्त, महतारी -बाप से प्यार करंयवाला पुत्र समझके काम करयंवाला सेवक अऊर जेसे मनेक शांती मिले अईसन पत्नी सबके चाही।.

50) ज्यादा ज्ञानी अऊर बुदि्धान ऐन्हन के साथ किहल काम कभव सफल नाय होतं।.

51) दिल में रहयवाला दोस्त, गुणी सेवक, कहलगयलं सुनयवाली पत्नी अऊर समझदार स्वामी ऐनके साथ आपन दुख बाटयपें आदमी सुखी होथं।.

52) कवन भी गलत काम, पहिले से ही होत बा ऐहिबीना हमहू किहे अईसन समझयवाले समाज सत्य से हमेशा के बीना दूर रहथनं।.

53) राजा न्याय क पालन करयंवाला आदमी के साथ, जेकर भाई न होई ओकर भाई बनकें, जेकर आँख नाय होत ओकर आँख बनथं।.

54) अपने हित बीना शक्तीमान अऊर कुलीन सेवक क भी पोषण करयं के चाहीं।.

55) अपने सक्के अच्छा काम करयं वालन क कभव अपमान करयं के न चाही। ओन्हन के अपमान से बचाव्य के चाहीं। खूद के लडिक्याॅ समान ओकर देखभाल करयं के चाहीं। आपक प्रगती होई।.

56) काम करयं वाले मनई पे लक्ष्मी प्रसन्न रहथीनं।.

57) बड़कं के संघे मुकाबला करत दईयाॅ हाथी के नाय भाला क परवाह न करत पहाडे के टक्कर मारब, ज्यादा योग्य बा।.

58) नीच लोगन के कहयं मुताबीक चलयवाला राजा हमेशा संकट में घीरा रहथं।.

59) सांप के दूध पियाऊब अऊर मुर्ख के सलाह देब एक जईसन बां काहिकेकी दुनव क अंजाम बुरा होथं।.

60) अपने पे जेकर श्रद्धा बा उही के उपदेश दं।. नाहित जंगल मे रोव्य के समान निष्फल रहबं।.

61) बंद डिब्बा में रखल दिया क

अंन्धेरा मे कवनव उपयोग नाय होत उही तरिकासे गलत जगह पे अपने होशियारी क प्रयोग न करयं के चाहीं विवेक के साथ काम लेयं।.

62) पृथ्वी पे रहिके अलग - अलग भाषा वेष जे धारण नाय किहेस ओकर जन्म व्यर्थ बां।.

63) आदमी के आपन थोड़ा भी धन केहू दुसरे के न दिखाव्य के चाही।.

64) पानी में जवन अन्न बा ओके मच्छली खाईं, जवन जमीन पे बा ओके प्राणी खायेन, जे आकारा में बा ओके पक्षी खायेनं।. लेकीन अमीर आदमी कतव भी रही लेकीन धूर्त लोग ओके लुटीहीं।.

65) खुद के हिम्मत से वैभवशाली बनयं।। राज्य में वैभवहीन होव्य वाले आदमी सबसे नीच माना जाथं।.

66) ऐशो आराम से जीययवाले के कुछ वक्त बाद उही जगह लाचारी से जीययं पड़ा ऊ सबके नीदां क विषय बनथं।.

67) बोलय पे अंकुश रखके दिल से योग्य संदेश दुश्मन के देव्य पे ओकर पूरा नाश होथं।.

68) बीना मतलब के केवभी केहूक मदत नाय करतं।.

69) बिना मतलब के अगर केवभी केहूके भी साहयता करथं त समझ की दाल में कुछ काला बां।.

70) जग में मूर्ख पंडित से द्वेष करथं, धनहीन- धनवान से, पापी- पुण्यवान, से अऊर दूराचारी औरत कुलीन औरत से द्वेष करथं।.

71) जवन दोस्त द्रोही अऊर विश्र्वातघाती होथेनं ऊ जबतक सूरज अऊर चॉद बा तब तक नरक क धनी होथेनं।.

72) बाप, भाई, बेटवॉ या दोस्त जे भी आपन जान लेव्यपे तुला होई, ओके मारबही अच्छा।.

73) राजनिती करयं वाले बहुरुपीयॉ होथेनं कभव सच, कभव झूठ, कभव मीठ, कभव कठोर, कभव प्यार से, कभव घातक बात करथेनं।. कभव

दानी, कभव स्वार्थी, कभव फिजूल खर्ची त कभव व्यवहारी ई बहुरुपीया क पहचान बां।. ओन्हनसे बचके रहयं के चाहीं।.

74) होनी के केवभी टाल नाय सक्तं।. भाग्य अनुकूल न होव्य पे नाश होव्य में वक्त नाय लगतं।.

75) संकटकाल में दोस्त सबसे अच्छा साथी होथं।.

76) जेकरे पास दोस्त होथेनं ऊ असाध्य के भी साध्य कई सकथं।.

77) खराब लोगन से दोस्ती शुरूवात में छाया समान बड़ी होथं।. लेकीन बाद में धीरे-धीरे छोड देत चली जाथ।. लेकीन सज्जन से दोस्ती शुरु में छोट अऊर बाद में बड़ी होय जाथं।.